22 नईदुनिया
इंदौर, गुरुवार 17 मार्च 2016

वरिष्ठ नागरिकों का बचाव पहली जरूरत

वरुण कपूर
आईपीएस

लगातार देखने में आ रहा है कि साइबर क्राइम का जोखिम एक पिशाच की तरह वरिष्ठ नागरिकों के पीछे पड़ा है और उन्हें शिकार बना रहा है। खासतौर पर फिशिंग और विशिंग तकनीक का इस्तेमाल कर निजी जानकारी हासिल करने और फिर साइबर फाइनेंशियल क्राइम करने के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। एटीएम अटैक, ऑनलाइन बैंकिंग क्राइम या अन्य तरह की आर्थिक धोखाधड़ी इसी साइबर फाइनेंशियल क्राइम का हिस्सा हैं। सवाल उठता है कि आखिर इतनी बड़ी संख्या में हमारे वरिष्ठ नागरिकों को क्यों निशाना बनाया जा रहा है। जवाब आसान है- वरिष्ठ नागरिकों के खिलाफ धोखाधड़ी में ज्यादा कामयाबी मिल रही है और धोखेबाजों के लिए उनसे जानकारी निकलवाना भी ज्यादा आसान है। असल दुनिया में जिस तरह अपराधी फर्जी पुलिसवाले बनकर उम्रदराज महिलाओं को बहला-फुसलाकर या डराकर आसानी से जेवर लूट रहे हैं, वर्चुअल वर्ल्ड में भी लगातार ऐसा हो रहा है। समस्या से निजात पाने के लिए इस स्थिति का विस्तृत विश्लेषण जरूरी है।

सबसे पहली बात यह है कि चाहे भारत हो या दुनिया का कोई अन्य देश, वरिष्ठ नागरिकों को तकनीक का बहुत ज्यादा ज्ञान नहीं होता है। खासतौर पर नई तकनीक का। वे अपने फायदे के लिए बमुश्किल इस तकनीक का उपयोग कर पाते हैं। ऐसे में इसकी बारीकियों और जटिलताओं को समझना तो दूर की बात, अपराधी इसी का फायदा उठाते हैं। दूसरी बात यह है कि वरिष्ठ नागरिक भोले होते हैं और आसानी से किसी पर भी भरोसा कर लेते हैं। यही कारण है कि समाज के अन्य वर्ग की तुलना में उन्हें धोखा देना आसान होता है। तीसरा पहलू यह है कि धोखे का शिकार होने के बाद इसका अहसास होने में वरिष्ठ नागरिकों को काफी वक्त लग जाता है। कोई भी आसानी से स्वीकार नहीं करता कि वह पीड़ित है। चौथी बात यह है कि वे जवाबी कार्रवाई करने में भी बहुत देर करते हैं। इससे साइबर अपराधी को बच निकलने का मौका और वक्त मिल जाता है। वरिष्ठ नागरिकों को जागरूक बनाने की जरूरत है। उन्हें तत्काल उस खतरे का आभास कराया जाना चाहिए, जिसकी तलवार उन पर लटक रही है। इन जोखिमों और अपराधियों द्वारा अपनाए जा रहे तौर-तरीकों के संबंध में परिवार के अन्य सदस्यों को उनसे बात करना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि पहले परिवार के अन्य सदस्य नए जमाने के इन खतरों और तकनीकों से परिचित हों। समाज के सभी वर्गों को साइबर क्राइम के जोखिम को समझने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही इससे बचने के उपाय भी करना चाहिए। केवल तभी वे इस बड़े खतरे से खुद को बचा पाएंगे और सुनिश्चित कर पाएंगे कि वरिष्ठ नागरिकों और अपनों से बड़ों को विनाशकारी हमलों से बचा पाएंगे।

बुजुर्ग कैसे बचें साइबर अपराधियों से

- असल दुनिया की तर्ज पर बहला-फुसलाकर या डराकर वर्चुअल वर्ल्ड में दुनियाभर में साइबर अपराधी उम्रदराज लोगों को निशाना बना रहे हैं इसलिए वरिष्ठ नागरिकों को जागरूक बनाने की जरूरत है।
- साइबर क्राइम के जोखिमों और अपराधियों द्वारा अपनाए जा रहे तौर-तरीकों के संबंध में परिवार के अन्य सदस्यों को बुजुर्गों से बात करना चाहिए।
- ऑनलाइन धोखाधड़ी, निजी जानकारी चुराना, किसी की पहचान चुराना, फर्जी बैंक कॉल आदि के बारे में बुजुर्गों को घटनाओं की जानकारी देकर और इनसे मिलने वाले सबक के बारे में बताया जाना चाहिए ताकि वे सतर्क रहें।

(लेखक अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पद पर इंदौर में पदस्थ हैं और विचार उनके व्यक्तिगत हैं)

ईमेल: varunkapoor170@gmail.com